

જૈ સાઈં અમાં

નિત્ય નેમ

પુષ્પ ૧૭

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

बोल महाराज अयोध्या नाथ की जै
बोल मिठिड़े बाबल साईं की जै

मंगल आरती

मंगल आरती साईं दयाल की ।

नित नव मंगल होत निरखि छबि, प्राण प्यारे प्रणतन पाल की ॥

मंगल रूप श्री स्वामिनि मिठिड़ी, मंगल शोभा राघवलाल की ॥

मंगलमयी शिर पाग बिराजे, मंगल शोभा नयन विशाल की ॥

मंगलमयी मुस्कान मनोहर, मंगल वाणी रहस्य रसाल की ॥

मंगलमयी प्रभु प्रेम की चितवन, मंगल शोभा भृकुटि भाल की ॥

चरणकमल नितु मोदमंगलमयी, पावन पटुली मैथिलि बाल की ॥

मंगलनिधि साईं अमड़ि जी जोड़ी, प्रेमियुनि हृदय मंजुमराल की ॥

श्रीराम जन्म स्तुति

भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी ।
हरिषत महतारी मुनि मनहारी अद्भुत रूप निहारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा निज आयुध भुजचारी ।
भूषण बनमाला नयन विशाला शोभा सिन्धु खरारी ॥
कह दुई कर जोड़ी अस्तुति तोरी केहि विधि करहुं अनन्ता ।
मायागुण—ज्ञानातीत अमाना वेद पुराण भनन्ता ॥
करुणा सुखसागर सब गुणआगर जेहिं गावहिं श्रुति सन्ता ।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयेउ प्रकट श्रीकन्ता ॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम—रोम प्रति बेद कहे ।
मम उर सो वासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहे ॥

उपजा जब ज्ञाना प्रभु मुस्काना चरित बहुत विधि कीन चहे ।
कह कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहे ॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा ।
कीजे शिशु लीला अति प्रिय शीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुन बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुर भूपा ।
यह चरित जो गावहिं हरि पद पावहिं तेन पड़हिं भवकूपा ॥

दो०—विप्र धेनु सुरसन्तहित लीन्ह मनुज अवितार ।
निज इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गौपार ॥

...

श्रीस्वामिनि जन्म स्तुति

भई प्रगट कुमारी भूमि विदारी जनहितकारी भयहारी ।
अतुलति छबिभारी मुनिमनहारी जनकदुलारी सुकुमारी ॥
सुन्दर सिंघासन तेंहि पर आसन कोटि हुताशन दुतिकारी ।
शिर छत्र विराजे सखि गन राजे निजनिज साजे कर धारी ॥
सुर सिद्ध सुजाना हनहिं निशाना चढ़े विमाना समुदाई ।
वरषहिं बहु फूला मंगलमूला अनुकूला श्रीजू गुनगाई ॥
देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर अधिकाई ।
स्तुति मुनि करहीं आनन्द भरहीं पांयनि परहीं हरषाई ॥
ऋषि नारद आये नाम सुनाये सुनि सुखपाये नृप ज्ञानी ।

श्री सीय सुनामा पूरणकामा सब सुखधामा गुण खानी ॥
सिय सन मुनराई विनय सुनाई समय सुहाई मृदुबवनी ।
लालनि तनु लीजे चरित सुकीजे यह सुख दीजे नृपरानी ॥
सुनि मुनिवर बानी श्रीजू मुस्कानी लीला ठानी सुखदाई ।
सोवत जनु जागी रोवन लागी नृप बड़भागी उरलाई ॥
दम्पति अनुरागेउ प्रेम सुपागेउ तेहि सुख लागेउ मन लाई ।
स्तुति श्रीजू केरी प्रेम लतेरी वरणहि चेरी शिर नाई ॥

दो०— निज इच्छा मख भूमि ते प्रगट भई श्रीजू आय ।
चरित किये पावन परम सन्तन मोद बढ़ाय ॥
चरित किये पावन परम श्रीमैगसि मोद बढ़ाय ॥

आशीष

जै सुख देवी नन्दन तुम जग वन्दन प्रीतम प्रेम उपासी हो ।

जै आनन्दकन्द अलबेलड़ा साईं नीह निकुंज निवासी हो ॥

जै मनहरण मनोहर बापू शील सिन्धु सुखरासी हो ।

सदा जियो साईं अमां प्यारल कथा विरूंह विलासी हो ॥

जै सुखवास बिहारी साईं स्वामिनि चरण पुजारी हो ।

सती सुहागिन के सम सुन्दर एक नेह व्रतधारी हो ॥

सदा सनेह सरिसब्ज रहो तुम सजननि के सुखकारी हो ।

सदा जियो साईं अमां प्यारल प्रीति रीति प्रति प्यारी हो ॥

जै गरीबि श्रीखण्ड संत शिरोमणि अतिशय चरित उदारा हो ।
रवि शशिसम चमकत हो निशिदिन प्रेम—प्रकाश तुम्हारा हो ॥
अखिल ब्रह्मण्ड नायकु वसि कीनो सहज सनेह की धारा हो ।
सदा जियो साईं अमां प्यारल हंसि मुख हरी हमारा हो ॥
जै दीन बन्धु सुख सिन्धु सलोने महिमा अमित तुम्हारी हो ।
जै प्रीतम प्रेम पयोनिधि पूरण पिय कीरति विस्तारी हो ॥
जै लाड़ लड़ावन पियमन भावन सिय राघव रिझवारी हो ।
सदा जियो साईं अमां प्यारल आशीष नित्य हमारी हो ॥

साईं साहिब की जै, साईं साहिब की जै ।

साईं साहिब की जै, साईं साहिब की जै ॥

दो०— पिर सन्दी जिनि ग़ाल्हिड़ी तिन सदा वसन्त बहारु ।

नितु नव मंगल तिनि घरे जिनि श्रीराम प्यारु ।

नितु नव मंगल साईं अमड़ि घरे जिनि श्रीराम प्यारु ॥

बोल महाराज अयोध्या नाथ की जै ।

बोल मिठिड़े बाबल साईं की जै ॥

साईं साहिब जन्म स्तुति

थियो प्रघट्ट प्यारो, जीय जियारो साईं साहिब सुखदाई ।
कुल उज्यारो, सन्तु सोभारो माता मनु हरषाई ॥
करे किलकारी, शोभा प्यारी, गद् गद् थिया नर नारी ।
चवनि चौधारी, जै जै कारी, छाईं बसन्त बहारी ॥
आयो आत्माराम, गुरु अभिरामा लालु लाखीणो गोदिकयो
चिरु जीवे बालकु जग प्रति पालकु आशीष वचन उमंग चयो
धनु धनु तूं माता, जन सुख दाता, गोद तुंहिजी में जनमु वतो
लालु लासानी भक्ति जो दानी, सियरघुवीर जे रंगि रतो ॥

बची सुखबाई, दियाई वाधाई, थी तुंहिजी गोद सभागी ।
 लाड़ लड़ाइजि, कण्ठ सां लाइजि, आनन्दु कन्दु अनुरागी ॥
 मेटे अंधियारो, करे उज्यारो, नीह जी नँदी वहाईदो ।
 रस जो रस्तो, सुगमु ऐं सस्तो, राम मिलण लाइ ठाहींदो ॥
 स्वसुखु मिटाए, विरूंह वधाए, आशीष सबकु सेखाईदो ।
 करुणा रस सां जानिब जस सां ततल दिलियुनि खे ठारींदो ॥
 चोली पहिराए, हरषु वधाए, हथिड़ो कृपा जो शीश धरियो ।
 वचन प्यारा, गुरु देव वारा, बुधी अमड़ि जो जीउ ठरियो ॥
 दो०— दास कल्पतरु प्रणतहित, सत्गुरु श्रीखण्डि चन्दु ।
 बालरूप में प्रगटु थियो, मात पिता सुख कन्दु ॥

संध्या आरती

बोल महाराज अयोध्या नाथ की जै
बोल मिठिड़े बाबल साईं अमां की जै

श्रीयुगल आरती

आरती युगल सरकार तेरी कीजै ।
तन मन धन सब अर्पण कीजै ॥
रवि शशि कोटि वदन की शोभा ।
युगल निरखि मेरा मनड़ो लोभा ॥
गौर श्याम मुख निरखत जीजे ।
युगल सरूपड़ो नैन भरि पीजे ॥

कंचन थार कपूर की बाती ।
युगल निरखि मुंहिजी ठरिड़ियमि छाती ॥
गुलनि जी सेज गुलनि जी माला ।
गुलनि खां कोमल स्वामिनि राघव लाला ॥
क्रीट मुकुट कर धनुष बाण सोहे ।
युगल चन्द्र मेरे मनड़े को मोहे ॥
पहिरिनि नील पीत पट साड़ी ।
श्री स्वामिनि प्यारो अवध बिहारी ॥
कौशल्या कुमार श्री सुनैना कुमारी ।
आरती करनि सकल अयोध्या नारी ॥

मंगल मनावहिं मिथिला नारी ।
सोहलड़ा गाईनि सुहाग भरी नारी ॥
दशरथ लाड़लो श्री जनक किशोरी ।
परम आनन्द सों जियो युगल जोड़ी ॥
आरती युगल सरकार तेरी कीजै ।
तन मन धन सब अर्पण कीजै ॥

दशरथ घर अवतार आनन्दु कौशल्या पावे आनन्दु कौशल्या पावे ।
अविचलु राजड़ो माणींदुमि रघुवरु श्रीजू वर स्वामी ॥

साईं साहिब आरती

आरती श्री गुरु मैगसि चन्द की,
शोभा सागर आनन्द कन्द की ।
रस निधि रूप निधि प्रेम महा निधि,
हित चाहक नित जानकी चन्द की ॥
सन्त शिरोमणि प्रणति पालक,
कोकिला श्री कौशल्या नन्द की ॥

पार्थिवि प्राणा श्री सिंग देवी,
हित रूपा सहिचरि भूनन्द की ।
बृज बन में जिनि घरिड़ो बणायो,
दिलिड़ी ठारियाऊं बॉके दिलिबन्द जी ॥
गुरुअ अमर जी ओट वताऊं,
कृपा खटियाऊं गुरु गोविन्द की ।
अति अनुराग सों आशीष करो मिलि,
जोड़ी जिये मुंहिजी आनन्द सिन्धु की ॥

आशीष

सत्संग जा घोट गुरु अमर जी ओट थियेव,
होउ लोट पोट प्रेम रस के उमंग में ।

सत्संग जा शाह साईं हीणनि हमराह साईं,
निमाणनि नाह रहो राघव जे रंग में ॥

सत्संग सरदार भरिया रहनिव भंडार नितु,
यह आशीष वारवार आरोग्य अंग अंग में ।

सत्संग जा धणी पंहिजे प्रीतम खे वर्णीं शाल,
लहो कुरिब कणी झूलो प्रेम रस रंग में ॥

अंचल पसारि मागूं वार वार विधिना ते,
बाबल कृपाल तुम नितहि सुखी रहो ।
लक्ष्मी को नाथ रहे सदा संग साथ तोसों,
गाय गुण गाथ सुख साज में सने रहो ॥
सुखमा निधान शील सरल सुजान प्रभु,
महिमा अपार प्रेम रस में भिने रहो ।
बड़े हो उदार नित देत दान दीनन को,
बृज के निवासी मोद मंगल भरे रहो ॥

गरीब निवाज़ बाबा लाज के जहाज बाबा,
सन्त सिरताज बाबा शील के भण्डार हो ।
दीन के दयाल बिन कारण कृपाल बाबा,
दशरथ लाल के प्रेम अवितार हो ॥
नीति के निधान प्रीति रीति प्रदान करो,
कलि जीव तारिवे को आए संसार हो ।
देत हूं आशीष नित राखो जगदीश तेरो,
कोटनि वरीष बृजभूमि सुख सार हो ॥

नैननि के तारे प्राण प्यारे प्राण नाथ साईं,
दास रखिवारे तुम दीन हितकारी हो ।
सनातन धर्म की जुग जुग रक्षा कीनी,
सब देवनि मनाइ रघुवीर भक्ति धारी हो ॥
जो जो शरण आयो तांको नाम रस दान दियो,
पापनि पुनीत दोऊ लोक हितकारी हो ।
जांके पीठ हाथ धरयो तांते यमराज डरयो,
कृपा के निकेत साईं वन्दना हमारी हो ॥

सांवरो सलोनो सुकुमार प्राण आधार कीन्हो,
अवध सुहाग तेरे शीश सिरताज हैं ।
लव कुश लाल लेके गोद महा मोद भरे,
नैननि के आगे नितु अवध समाज है ॥
शील निधि रूप निधि नेही रघुन्दन के,
गाहक गरीबनि के पूरे सब काज हैं ।
शारदा ओ शेष ओ गणेश ओ महेश विधि,
सब रखवारे तेरे मेरे महाराज हैं ॥

जुगां जुग जाओ साईं खीर खण्डु पीओ साईं,
अजर अमर रहो प्रेम रस पागे हैं ॥

दोहा—

सन्तनि के सिरताज हो दासन के प्रतिपाल ।
प्रेम भक्ति भण्डार हो बाबल दीन दयाल ॥
बाबल दीन दयाल हो सदां सेवक हितकारी ।
बृज मण्डल विहरो सदां भक्तनि भयहारी ॥
प्रीतम प्रेम तरंग में रैन दिवस राते रहो ।
रमा नाथ बृज नाथ की कृपा कोर नितहीं लहो ॥

हरि हर गुरु प्रसाद ते होय अचल तुव राज ।
नित नव मंगल मोद लहो सन्तनि के सिरताज ॥
सदा जियो साईं अम्मा सन्तनि जा सिरताज ।
जुगजुग माणियो साहिबी महिर भरिया महाराज ॥
पिरसन्दी जिनि गाल्हिड़ी तिनि सदां बसन्त बहारु ।
नितु नव मंगल तिनि घरे जिनि श्रीराम प्यारु ॥
नितु नव मंगल साईं अमड़ि घरे जिनि श्रीराम प्यारु ॥

बोल महाराज अयोध्या नाथ की जै ।

बोल मिठिड़े बाबल साईं की जै ॥

ब्रज भूमि की महिमा

८

॥ मिठड़े बाबल साईं अमां जी सदाई जय ॥

वृन्दावन धाम बृज—भूमि अमां जी जय
बृजभूमि अमां बृजभूमि अमां ।

मां आयसि शरणाइ बृजभूमि अमां ॥
रजराणी अमां रजराणी अमां ।

पंहिजी रजड़ी चुमाई बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमांबृजभूमि अमां ।

पंहिजी गोदीअ वसाइ बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां बृजभूमि अमां ।

पंहिजा प्यारा पसाइ बृजभूमि अमां ॥

पंहिजे बननि घुमाई	बृजभूमि अमां ॥
रस रंग में झूमाई	बृजभूमि अमां ॥
जुगल नामडो जपाइ	बृजभूमि अमां ॥
जुगल लीला दरसाइ	बृजभूमि अमां ॥
जुगल हियंड़े वसाइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजे लेखे में लाइ	बृजभूमि अमां ॥
मुंहिजी वेनती वरणाइ	बृजभूमि अमां ॥
रहां साईं अमां शरिणाइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजे गोल्युनि गढ़िजाइ	बृजभूमि अमां ॥
कढ़हिं कीन छढ़िजाइ	बृजभूमि अमां ॥
प्रेम मेंघिड़ो वसाइ	बृजभूमि अमां ॥
मां रुअंदी हसाइ	बृजभूमि अमां ॥

लीला सागरु उमड़ाइ	बृजभूमि अमां ॥
सुहग सुखिड़ा वधाइ	बृजभूमि अमां ॥
जानिब जस में जिआइ	बृजभूमि अमां ॥
प्रेम अमृत पियाइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजी सेवक सदिजांइ	बृजभूमि अमां ॥
अनुग्रह अदिजांइ	बृजभूमि अमां ॥
युगल लिवड़ी लाइ	बृजभूमि अमां ॥
सुतल भागिड़ो जगाइ	बृजभूमि अमां ॥
रास रसिकु रिझाइ	बृजभूमि अमां ॥
साईं अमड़ि मिलाइ	बृजभूमि अमां ॥
इहो जसु खटिजांइ	बृजभूमि अमां ॥
मैगसि मंगल कजांइ	बृजभूमि अमां ॥

साईं अमां सुखी रखिजांइ	बृजभूमि अमां ॥
कुशल कल्याण कजांइ	बृजभूमि अमां ॥
गुण गीतड़ा गाराइ	बृजभूमि अमां ॥
साईं अमां खीरणी खाराइ	बृजभूमि अमां ॥
साईं अमां हरषाई	बृजभूमि अमां ॥
कृपा सुधा वरिषाई	बृजभूमि अमां ॥
युगल सुखु सरिसाइ	बृजभूमि अमां ॥
रस रासि में रसाइ	बृजभूमि अमां ॥
सिक सबकु सेखाइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजे चिठिड़े लिखाइ	बृजभूमि अमां ॥
निकुंज लीला देखाइ	बृजभूमि अमां ॥
जुगल सेवा समुझाइ	बृजभूमि अमां ॥

युगल क्यासु भरिजांइ
कृपा हथिड़ो धरिजांइ
मुंहिजे प्राणनि प्रभाइ
मिले भक्ति अइं भाउ
रसिक संतन मिलाइ
पंहिजी चाउंठि चुमाइ
साई अमां मिलाइ
बृचा रुअन्दा खिलाइ
साई अ कथा बुधाइ
अमड़ि आनन्द वधाइ
पंहिजी महिमा लखाइ
सचो रसिड़ो चखाइ

बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥

जुगल जूठिड़ी खाराइ	बृजभूमि अमां ॥
जुगल गुनिड़ा गाराइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजो साहिबु देखारि	बृजभूमि अमां ॥
शील अदबु सेखारि	बृजभूमि अमां ॥
हाणे देरड़ी न लाइ	बृजभूमि अमां ॥
श्री मैगसि मिलाइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजे वेड़हे वसाइ	बृजभूमि अमां ॥
प्रिया प्रीतम पसाइ	बृजभूमि अमां ॥
साई अमां हिंदोर झुलाइ	बृजभूमि अमां ॥
साई अमां लाढ़ड़ा लड़ाइ	बृजभूमि अमां ॥
अमृत सरिता बहाइ	बृजभूमि अमां ॥
साई अमां अन्हवाह	बृजभूमि अमां ॥

भाव भगति भिजाइ	बृजभूमि अमां ॥
इहो दाणु दिजाइ	बृजभूमि अमां ॥
थकीअ थोरिड़ो लाइ	बृजभूमि अमां ॥
मुंहिजी मांदिड़ी मिटाइ	बृजभूमि अमां ॥
निष्काम नींहड़ो निभाइ	बृजभूमि अमां ॥
तत् सुख प्रीतिड़ी वधाइ	बृजभूमि अमां ॥
इहो अर्जिड़ो उनाइ	बृजभूमि अमां ॥
मुंहिजी वेनती वरिनाइ	बृजभूमि अमां ॥
अविद्या ऊंदहि मिटाइ	बृजभूमि अमां ॥
सनेह सोझरो वधाइ	बृजभूमि अमां ॥
चिरु जीए मैगसि माइ	बृजभूमि अमां ॥
मुंहिजे साहिड़े जो साई	बृजभूमि अमां ॥

रस रंगिड़े रचाइ	बृजभूमि अमां ॥
नाम नीहड़े नचाइ	बृजभूमि अमां ॥
कथा सागर डुबाइ	बृजभूमि अमां ॥
लीला लालन लखाइ	बृजभूमि अमां ॥
प्रेम प्रीति खे वधाइ	बृजभूमि अमां ॥
साई अमां गाल्हिड़ियूं बुधाइ	बृजभूमि अमां ॥
अमां देरिड़ी न लाइ	बृजभूमि अमां ॥
कृपा थजुड़ी धाराइ	बृजभूमि अमां ॥
प्रेम पोशाक पहिराइ	बृजभूमि अमां ॥
गुणनि भूषण धराइ	बृजभूमि अमां ॥
जुगल जुतिड़ी कजाइं	बृजभूमि अमां ॥
गोपियुनि घरिड़ा घुमाइ	बृजभूमि अमां ॥

विरुंह वेहड़ो वसाइ	बृजभूमि अमां ॥
जुगल लीला दरिसाइ	बृजभूमि अमां ॥
इहो अंगलु मज्जिांइ	बृजभूमि अमां ॥
भव भोला भज्जिांइ	बृजभूमि अमां ॥
हरि रस में हलाइ	बृजभूमि अमां ॥
नाम चस्को चखाइ	बृजभूमि अमां ॥
दम देर न लगाइ	बृजभूमि अमां ॥
करि सनेह सगाइ	बृजभूमि अमां ॥
पद दूलह परिणाइ	बृजभूमि अमां ॥
सिक साठिड़ा कजांइ	बृजभूमि अमां ॥
विरुंह वगिड़ा दिजांइ	बृजभूमि अमां ॥
दिलि प्रेम रंगिडजांइ	बृजभूमि अमां ॥

मिठी मुरली बुधाइ	बृजभूमि अमां ॥
साई अमां विंदुराइ	बृजभूमि अमां ॥
हरषु उमंगु वधाइ	बृजभूमि अमां ॥
लीला लालन लुभाइ	बृजभूमि अमां ॥
केल कुंजनि वसाइ	बृजभूमि अमां ॥
युगल पदिड़ा पसाइ	बृजभूमि अमां ॥
नेह लगनि लगाइ	बृजभूमि अमां ॥
जस जोतिड़ी जगाइ	बृजभूमि अमां ॥
चित चोली रंगाइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजे गोद में मंगाइ	बृजभूमि अमां ॥
निकुञ्जं नीहड़ो लगाइ	बृजभूमि अमां ॥
युगल पदनि में पगाइ	बृजभूमि अमां ॥

दिलि फुलवाड़ी बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
घुमनि सीय रघुराइ	बृजभूमि अमां ॥
भाव रुपड़ो पचाइ	बृजभूमि अमां ॥
सचे रस में रचाइ	बृजभूमि अमां ॥
बुधां कथा रघुराइ	बृजभूमि अमां ॥
आंसुनि चोलिड़ी भिजाइ	बृजभूमि अमां ॥
सिक शरधा वधाइ	बृजभूमि अमां ॥
रस राज में रहाइ	बृजभूमि अमां ॥
रास रस में छकाइ	बृजभूमि अमां ॥
साईअ घर में टिकाइ	बृजभूमि अमां ॥
बान्हप बोली दिजाइ	बृजभूमि अमां ॥
इहो कृपा कजाइ	बृजभूमि अमां ॥

युगल व्याहु देखाइ	बृजभूमि अमां ॥
बृह्मा खां वेदी पड़िहाइ	बृजभूमि अमां ॥
गोपियुनि खां लादिड़ा गाराइ	बृजभूमि अमां ॥
देवनि खां मंगल मनाइ	बृजभूमि अमां ॥
अमां आशिड़ी पुजाइ	बृजभूमि अमां ॥
घरिड़े खीरड़ो छटाइ	बृजभूमि अमां ॥
अमड़ि अंडणु देखाइ	बृजभूमि अमां ॥
खेलनि युगल सदाई	बृजभूमि अमां ॥
अचे बाबा नन्दराइ	बृजभूमि अमां ॥
युगल सिरिड़ो झुकाइ	बृजभूमि अमां ॥
बाबा खां आशीष देवाइ	बृजभूमि अमां ॥
बान्ही बलि बलि जाइ	बृजभूमि अमां ॥

कदम्ब कुंज बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
युगल घुमनि जहिं छांइ	बृजभूमि अमां ॥
दिसां वसीं वट छांह	बृजभूमि अमां ॥
थिये प्रेम जो उमाहु	बृजभूमि अमां ॥
बृज जो मोरिड़ो बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
जय जय श्याम जी चवाइ	बृजभूमि अमां ॥
बृज जो तोतिड़ो बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
स्वामिनि सुजसु गाराइ	बृजभूमि अमां ॥
बृज जो वछुड़ो बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
चारे कुअंर कन्हाइ	बृजभूमि अमां ॥
बृज जो कूकरु बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
रसिकनि जूठिड़ी खाराइ	बृजभूमि अमां ॥

पंहिजे गोद में लिकाइ	बृजभूमि अमां ॥
रूप रस में छकाइ	बृजभूमि अमां ॥
नौका लीला देखाइ	बृजभूमि अमां ॥
थिये चरिणनि जी चाह	बृजभूमि अमां ॥
आशीष वारी दिलड़ी बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
साईं अमां मंगल गाराइ	बृजभूमि अमां ॥
मिठी लगे मैथिलि माइ	बृजभूमि अमां ॥
दिसां प्रसन्नु रघुराइ	बृजभूमि अमां ॥
साईं अंडण नचाइ	बृजभूमि अमां ॥
सिक गपिड़ी अ गपाइ	बृजभूमि अमां ॥
सुखनिवास भूमिड़ी बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
कथा करे कोकिलि साईं	बृजभूमि अमां ॥

मुंहिजो प्यारो परिचाइ	बृजभूमि अमां ॥
साईं अमां सरिचाइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजी प्रजा बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
काई सेवा खणाइ	बृजभूमि अमां ॥
राम नाम रोटी खाराइ	बृजभूमि अमां ॥
गोबिन्द नाम खीरड़ो पियाइ	बृजभूमि अमां ॥
सिक सुई हणाइ	बृजभूमि अमां ॥
मनु अरोगु बणाइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजो देहड़ो देखाइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजे रज में रहाइ	बृजभूमि अमां ॥
दिसां कोकिलि साईं	बृजभूमि अमां ॥
लव कुश रखिड़ी बधाइ	बृजभूमि अमां ॥

रस राह में हलाइ	बृजभूमि अमां ॥
रूगो प्रेमी मिलाइ	बृजभूमि अमां ॥
सेवा सूझिड़ी दिजांइ	बृजभूमि अमां ॥
इहा कृपा कजांइ	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजे गोद रखिजांइ	बृजभूमि अमां ॥
कढ़हिं कीन कढ़िजांइ	बृजभूमि अमां ॥
साई अमां हरषाइ	बृजभूमि अमां ॥
सदां सुख सरिसाइ	बृजभूमि अमां ॥
साई खेले होरी फाग	बृजभूमि अमां ॥
जागे दासनि जो भाग	बृजभूमि अमां ॥
खाईढोढ़ी अई साग	बृजभूमि अमां ॥
गायां युगल रस राग	बृजभूमि अमां ॥

विझी गाहिडो मां वाति
करियां विनय दींह राति
दीमि लिवंडी जी लाति
युगल चरणनि जी ताति
साई अमां दिलडीअ खे ठारि
जुगल लीला देखारि
कनि दिव्य दीदार
चवनि जुगल जयकार
कनि कथा किलकार
वेही विरुंह वणिकार
दिसां साई अमां गढु
कनि सेवकनि सढु

बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥

कनि गुणनि जो गानु	बृजभूमि अमां ॥
बुधी रीझे भगुवानु	बृजभूमि अमां ॥
जीए सीयाराम साई	बृजभूमि अमां ॥
जियनि जुगल सदाई	बृजभूमि अमां ॥
द्रीमि सत्संग जी प्यास	बृजभूमि अमां ॥
मंजु इहा अरिदास	बृजभूमि अमां ॥
थिए नीह में निवास	बृजभूमि अमां ॥
दिसां रासि विलास	बृजभूमि अमां ॥
थियां सुन्दर तमाल	बृजभूमि अमां ॥
घुमनि लाइली अंइ लाल	बृजभूमि अमां ॥
थियां बलियुनि वितानु	बृजभूमि अमां ॥
वसे किशोरी अंइ कानु	बृजभूमि अमां ॥

वटु हीणनि जो हथु	बृजभूमि अमां ॥
देखारि प्रेम जो पथु	बृजभूमि अमां ॥
रहे प्रीतम जी यादि	बृजभूमि अमां ॥
दिलि दिलिबर सां शादि	बृजभूमि अमां ॥
लाइ रुगी हिक तार	बृजभूमि अमां ॥
साई अमां जी सम्भार	बृजभूमि अमां ॥
जागे निहछल प्यार	बृजभूमि अमां ॥
मुहिबु द्रिये न मयार	बृजभूमि अमां ॥
हिक तलिब हिक तात	बृजभूमि अमां ॥
जपियां नामु दींह राति	बृजभूमि अमां ॥
गायां युगल कुशलात	बृजभूमि अमां ॥
सुझे बुझे बी न बाति	बृजभूमि अमां ॥

पायां हरी नाम हारु	बृजभूमि अमां ॥
मिले सुखनि जो सारु	बृजभूमि अमां ॥
दिसां दिव्य दीदारु	बृजभूमि अमां ॥
झूले युगल सरकार	बृजभूमि अमां ॥
तूं निमाणनि माणु	बृजभूमि अमां ॥
तूं निताणनि ताणु	बृजभूमि अमां ॥
करियां रस जी रिहाणि	बृजभूमि अमां ॥
चऊं हरी रसु माणि	बृजभूमि अमां ॥
थीउ सदिडे सहाइ	बृजभूमि अमां ॥
साई अमां सुख सरिसाइ	बृजभूमि अमां ॥
इहो अर्जिडो अघाइ	बृजभूमि अमां ॥
बान्ही बलि बलि जाइ	बृजभूमि अमां ॥

साईं अमडिं दयाल	बृजभूमि अमां ॥
गोद लव कुश बाल	बृजभूमि अमां ॥
सदां माणीनि आनन्द	बृजभूमि अमां ॥
दिसनि जुगल मुखचन्द	बृजभूमि अमां ॥
कनि पतित पुनीत	बृजभूमि अमां ॥
दसिनि राम रस रीति	बृजभूमि अमां ॥
दीमि इहो दया दानु	बृजभूमि अमां ॥
भुले कीन भगुवानु	बृजभूमि अमां ॥
जुगल साईं अ जे गोद	बृजभूमि अमां ॥
दिसनि बाल विनोद	बृजभूमि अमां ॥
करनि जुगल सींगारु	बृजभूमि अमां ॥
अमां चवे बलिहारु	बृजभूमि अमां ॥

द्रीमि प्रीति अंइ प्रतीत
गायां साई अमां गीत
चवां साई अमां जयकार
बान्ही थिये बलिहार
कृष्णु कछ में कुद्रायां
लाल हिंदोर झुलायां
रज लेथिड़यूं मां पायां
तुंहिजी चेरिड़ी चवायां
कयां सन्तनि सन्मान
पढ़ां प्रेम जो पुराण
द्रीमि दिल वणन्दो दानु
मिले बाबलु भगुवानु

बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥
बृजभूमि अमां ॥

अमां गोद में बसनि	बृजभूमि अमां ॥
जुगल लालिड़ा हसनि	बृजभूमि अमां ॥
रस राज में रसनि	बृजभूमि अमां ॥
सभिनी प्यारिड़ो पसनि	बृजभूमि अमां ॥
परस्पर मखणु खसनि	बृजभूमि अमां ॥
अमां गोद विलसनि	बृजभूमि अमां ॥
अमां जुगल दुलराए	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजो सर्वसु लुटाए	बृजभूमि अमां ॥
मुंहिजो सदे साहु साहु	बृजभूमि अमां ॥
थिये हृदय उत्साहु	बृजभूमि अमां ॥
रुगी लालण जी लाति	बृजभूमि अमां ॥
थिये सफलु दींह राति	बृजभूमि अमां ॥

साईं प्रेम अवितारु	बृजभूमि अमां ॥
हरी रस जो दातारु	बृजभूमि अमां ॥
साईं सत्संग सरदार	बृजभूमि अमां ॥
अमां गरीबि गमटार	बृजभूमि अमां ॥
बुधां कथा किलिकार	बृजभूमि अमां ॥
मिठी लालन ललिकार	बृजभूमि अमां ॥
कनि गुणनि गुफ्तार	बृजभूमि अमां ॥
बुधी ठरनि बचा बार	बृजभूमि अमां ॥
साईं अमां जी सम्भार	बृजभूमि अमां ॥
वसे मुंहिजे वार वार	बृजभूमि अमां ॥
करियां नाम जो उचारु	बृजभूमि अमां ॥
रहां सिक में सचारु	बृजभूमि अमां ॥

तूं आहीं दयावान	बृजभूमि अमां ॥
थियां किशिन तां कुलबानु	बृजभूमि अमां ॥
साई संतनि सिरताज	बृजभूमि अमां ॥
गुरु गरीब निवाज	बृजभूमि अमां ॥
चाड़िहे नाम जे जहाज	बृजभूमि अमां ॥
वसाए रसिड़े जे राज	बृजभूमि अमां ॥
वधे साई जो शानु	बृजभूमि अमां ॥
थिये मुहिबु मेहरबानु	बृजभूमि अमां ॥
कनि सिक में सिनानु	बृजभूमि अमां ॥
माणीनि प्रेम प्रधानु	बृजभूमि अमां ॥
साई अमां सुखधाम	बृजभूमि अमां ॥
गदु घुमेंमि सीयराम	बृजभूमि अमां ॥

दियनि लीला ललाम	बृजभूमि अमां ॥
माणीनि अखण्डु आराम	बृजभूमि अमां ॥
गायां सदां मंगलाचार	बृजभूमि अमां ॥
करियां आसीस वार वार	बृजभूमि अमां ॥
साईं आहे शाहन शाहु	बृजभूमि अमां ॥
साईं निमाणनि वाहु	बृजभूमि अमां ॥
साईं हीणनि हमराहु	बृजभूमि अमां ॥
साईं प्रेम पातशाहु	बृजभूमि अमां ॥
मूं खुहिसल खे खणु	बृजभूमि अमां ॥
द्रीमि मुहबत जो मणु	बृजभूमि अमां ॥
मुंहिजे सद्दिडे खे सुणु	बृजभूमि अमां ॥
पंहिजे गोलियुनि में गणि	बृजभूमि अमां ॥

मिले सत्संग सम्राट	बृजभूमि अमां ॥
दासनि विरूंह जी वाट	बृजभूमि अमां ॥
लगे चरित्र जी चाट	बृजभूमि अमां ॥
जागे भागिड़ो ललाट	बृजभूमि अमां ॥
हाणे नींह सां निहारि	बृजभूमि अमां ॥
जदियूं जेदिड़ियूं जियारि	बृजभूमि अमां ॥
जीयनि युगल सरकारि	बृजभूमि अमां ॥
रहनि गुलों गुलजार	बृजभूमि अमां ॥
सदा साईं अमां जीत	बृजभूमि अमां ॥
माणीनि रासि रस रीति	बृजभूमि अमां ॥
साईं प्रेम जो भण्डारु	बृजभूमि अमां ॥
साईं दिलिड़ीअ जो ठारू	बृजभूमि अमां ॥

साईं अमडिं प्राणु	बृजभूमि अमां ॥
साईं सर्वग्य सुजानु	बृजभूमि अमां ॥
साईं जपे राधा नाम	बृजभूमि अमां ॥
गोदि वसे घनश्याम	बृजभूमि अमां ॥
अचे आंडनि आराम	बृजभूमि अमां ॥
नींह नशो आठों याम	बृजभूमि अमां ॥
सदा बुधां नाम नादु	बृजभूमि अमां ॥
मिले आनन्द अहिलादु	बृजभूमि अमां ॥
साईं सत्संग जो घोटु	बृजभूमि अमां ॥
साईं कृपा जो कोटु	बृजभूमि अमां ॥
साईं सत्संग जी सूंह	बृजभूमि अमां ॥
कनि वर जी विरूंह	बृजभूमि अमां ॥

साईं सत्संग जो शानु	बृजभूमि अमां ॥
दियनि दिलासनि दानु	बृजभूमि अमां ॥
साईं सन्तु भगवानु	बृजभूमि अमां ॥
जंहिजे वसि राम कानु	बृजभूमि अमां ॥
दियनि युगल विहारु	बृजभूमि अमां ॥
थियेनि दिलड़ी बहारु	बृजभूमि अमां ॥
लगूं साईं अमां लार	बृजभूमि अमां ॥
थियूं सिक में टुबटार	बृजभूमि अमां ॥
दियूं आशीष अकीचार	बृजभूमि अमां ॥
जियनि सुनैना कौशल्या बार	बृजभूमि अमां ॥
जियनि कीरति यशोदा दुलार	बृजभूमि अमां ॥
जिये सत्संग सरदार	बृजभूमि अमां ॥

मिले लगनि जो लाहु	बृजभूमि अमां ॥
थिये ठाकुर सां ठाहु	बृजभूमि अमां ॥
देखारि रस जी राह	बृजभूमि अमां ॥
दीमि शरधा अथाह	बृजभूमि अमां ॥
करियां रजिड़ीअ सनानु	बृजभूमि अमां ॥
रहे रुगो युगल ध्यानु	बृजभूमि अमां ॥
दीमि दिलि घुरन्दो दानु	बृजभूमि अमां ॥
मिटे अन्दर मां अभिमानु	बृजभूमि अमां ॥
साईं सत्संग सुलतानु	बृजभूमि अमां ॥
लगे प्यारो जिंऐ प्रानु	बृजभूमि अमां ॥
रहां सेवा सावधानु	बृजभूमि अमां ॥

सदा सिक में सुजानु	बृजभूमि अमां ॥
साई कथा कलितार	बृजभूमि अमां ॥
साई बुदा तारण हार	बृजभूमि अमां ॥
साई अ कृपा नाहे पार	बृजभूमि अमां ॥
लहे सेवकनि सम्भार	बृजभूमि अमां ॥
थोड़े गुणनि रिझवार	बृजभूमि अमां ॥
करे कृपा वार वार	बृजभूमि अमां ॥
भरे सुदिका मुंहिजो साहु	बृजभूमि अमां ॥
खावां प्रेम जो पुलाउ	बृजभूमि अमां ॥
तोखे हर हर नमस्कार	बृजभूमि अमां ॥
गायूं युगल जय जय कार	बृजभूमि अमां ॥

दोहा

साईं अमां सौभाग्य सां, मिल्यो दासनि खे भागु ।
वृन्दाविपिन निवास नितु, युगल नाम अनुरागु ॥
जय वृन्दावन धाम जी, जय ब्रजभूमि सुख धाम ।
जिते सदा क्रीड़ा करे, नन्द नन्दनु घनश्याम ॥

॥ बोल मिठिड़े बाबल साईं अमां जी सदाईं जय ॥

रस सुधा निधि

साईं अ सची कीरति जो अवितारु आ अमां
साईं अ सची भक्ति जी दातारि आ अमां ।
साईं अ मिठे सत्संग जो सींगार आ अमां
साईं अ मिठे बचनि जो आधार आ अमां ।
साईं अ सचे जो जग में जैकारु आ अमां
साईं अ मिठे जी महिमा बुधार्णहारु आ अमां ।
सुतल जीवन खे निण्ड मां जागाइणहार आ अमां
सेवा जी सूझ सनिहिड़ी सेखारणहार आ अमां ।
साईं कथा जो सूरज प्रकाश आ अमां
साईं हर्ष जो सागर हुल्लास आ अमां ।

साईं रस जो राजा रसरासि आ अमां
साईं आ सनेह सरसिज सुबासि आ अमां ।
साईं अ सां साकेत मो लही आई आ अमां
हिन्दु सिन्धु जे सब सन्तनि साराही आ अमां ।
साईं अ सुखी करण लाइ दिलि दरियाहु आ अमां
साईं जे रस उमंग जो उत्साहु आ अमां ।
साईं अ श्रद्धा सिक जो सचो शाहु आ अमां
दासनि जो जीवनु साईं ऐं साहु आ अमां ।
साईं अ जे सचे जस जी साराह आ अमां
अदब ऐं आशीष जी दसी राह आ अमां ।
साईं सत्संग मल्लाह ऐं नाव आ अमां
साईं अ सत्संग सुरतरु ऐं छांव आ अमां ।

साईं सत्संग सरिता ऐं नीर आ अमां
साईं सत्संग आनंद तंहि में लीन आ अमां ।
साईं सत्संग नाद प्यासी हिरणी आ अमां
साईं सत्संग अमृत रस झरणी आ अमां ।
साईं सत्संग रागु मधुर बीन आ अमां
साईं अ सचे अनुराग जे आधीन आ अमां ।
साईं सत्संग बादल ऐं मोर आ अमां
साईं सत्संग चन्द्रमा ऐं चकोर आ अमां ।
साईं सियाराम जे मन भाणी आ अमां
साईं नाम मलाई मखण चाणी आ अमां ।
साईं रस भण्डारु विरूंह विकाणी आ अमां
साईं साहिबु भोरो भारो सियाणी आ अमां ।

साईं सनेह धन जी धयाणी आ अमां
साईं श्रद्धा भक्ति जी रस वाणी आ अमां ।
साईं आ भक्ति भोजन प्रेम पाणी आ अमां
साईं आ पान बीड़ो लालाणि आ अमां ।
साईं आ कृपा मूरति वाखाणि आ अमां
साईं राम र सजी रिहाणि आ अमां ।
साईं सुन्दर कमल सुरहाणि आ अमां
साईं अ ऊंचे सनेह ते कुरबाणु आ अमां ।
साईं अमर आत्मा ऐं प्राणु आ अमां
साईं अ जस जे गान में जुवानु आ अमां ।
साईं अ सेवा सेखारण में सावधान आ अमां
साईं हर्ष हुल्लास जो सदां ध्यान आ अमां ।

साईं सत्गुर शाहु गुरुज्ञान आ अमां
भक्ति भोजन दियण लाइ महरबान आ अमां ।
साईं आ रस जो रागु तलब तान आ अमां
साईं हर्ष भण्डार खुशी अ खाणि आ अमां ।
साईं कृपा सिन्धु में कयो सिनानु आ अमां
साईं भक्ति भण्डार जो सचो दानु आ अमां ।
साईं मंगल नाम रसीली भोर आ अमां
साईं शरण पालक सची ठोर आ अमां ।
साईं रस जो सागर आलाणि आ अमां
साईं सनेह सिंधु में समाणी आ अमां ।
साईं अ मिठी कथा में भुलायो पाणु आ अमां
साईं अ श्रद्धा प्रेम में सुजाणु आ अमां ।

साईं प्रभु कृपा वरदान आ अमां
सत्गुर भगवंत भक्ति जो नीशान आ अमां ।
साईं दासनि दिलि जो ठारु आ अमां
भगवान जे गले जो प्रेम हारु आ अमां ।
साईं प्रेम पतंग सनेह दोरि आ अमां
साईं साहिब नाम जो कयो शोरु आ अमां ।
साईं रोचल लाल चेतुल नियाणी आ अमां
साईं गुणनि गगन में उड़ाणी आ अमां ।
साईं अ मधुर महिमा जो गौरो ज्ञानु आ अमां
साईं शाहन शाह सचो शानु आ अमां ।
साईं भूमलि भक्त भक्तियाणी आ अमां
साईं आ सचिड़ो सन्त सन्तयाणी आ अमां ।

साईं निमाणनि माणु नितानि ताणि आ अमां
साईं हर्ष भण्डार खुशियुनि खाणि आ अमां ।

.....

साईं साहिब महिमा

मुहिबत मन्दिर साईं

श्री सुख देवी नन्दन, तूं जग वन्दनु, दया जो सागरु तूं साईं ।
पतित उधारणु, तूं जग तारणु, सभ गुण आगरु तूं साईं ॥
दीननि बंधू, करुणा सिंधू, रूप उजागर तूं साईं ।
हर्ष जी खाणि, रूह रिहाणि, नीह जो नागरु तूं साईं ॥ १ ॥

कृपा मूरति सभगुण पूरति, परम दयालू तूं सनेही साई ।
इन्द्रियुनि जीता, सब के मीता, अति कृपालू तूं साई ॥
मुक्ति जो दाता, जन पितु माता, प्रेम जो वेता तूं साई ।
भक्ति जो दानी, तूं छबि खानी, नेंहियुनि नेता तूं साई ॥२॥
रघुवर गुण निधिड़ी, क्यास जी सिधिड़ी, सरलु सनेही तूं साई ।
भक्ति जो भानू, सर्व सुजानू, सिय पद सेवी तूं साई ॥
अदभुत रूपा, भक्तिनि भूपा शांति सरूपा तूं साई ।
प्रीतम प्यारा, जीअ जियारा, अमित अनूपा तूं साई ॥३॥
मीरपुरि चन्दा, आनन्द कन्दा, प्रेम अमन्दा तूं साई ।
सेवकनि संदा, दिलि दिल वन्दा, सुखमा कन्दा तूं साई ॥
महिर जा परिवर, सिक जा सरवर, दानी अवढरु तूं साई ।
सुखनि संदा घर, सुहिणा सतिगुर, मूरति मनहरु तूं साई ॥४॥

अधीननि आधार पड़िदे जी चादर, कृपा बादरु तूं साई ।
जस जा जलधर हर्ष जा हलधर, गरीबि गिरिधरु तूं साई ॥
धर्म धुरन्दरु प्रीति पुरन्दरु मुहिबत मन्दिरु तूं साई ।
निज कुल चंद्र विसुजी विंदुर, सिक में सुंदरु तूं साई ॥५॥
पर उपकारी जन हितकारी सब सुखकारी तूं साई ।
अबल अवितारी, पापियुनि तारी, विरूंह बिहारी तूं साई ॥
रस निधि राणा, नेही निमाणा, सोढल सियाणा तूं साई ।
सनेह सिबाणा भगतनि भाणा, खाई मखण चाणा तूं साई ॥६॥
युगल उपासी, सुषमा राशी, हर्ष हुलासी तूं साई ।
विरूंह विलासी, नेह निवासी, प्रेम प्रकाशी तूं साई ॥
अनाथनि नाथा, गायां गुण गाथा, सेवकनि साथा तूं साई ।
रंगिड़े राता, मुहबत माता, सहज सुहाता तूं साई ॥७॥

सुठो सबाझा सूंह भरियो, सोभारो सुबहानु ।
सन्त शिरोमणि सन्तनि भूषणु, सन्तनि जो सुलतानु ॥
मालिकु मिठिड़ो सभ खां सुठिड़ो, मैगसिचन्द्र महिरबानु ।
पीरनि पीरी मीरनि मीरी, दिलबर तूं नितु करीं थो दानु ॥८॥
नींहजी निधिड़ी व्यास जी सिधिड़ी, रसजी रिधिड़ी शील निधानु ।
गरीबनि ठारु, द्रदनि दातारु, साईं सरदार मित्र महानु ॥
साईं सुकुमारु आहीं प्रेम अवितारु,

थोरे गुण रिझिवार कयां जसड़ो गानु ।
मिठो गुरुदेव मुंहिजो देवनि देवु,
आहीं अलखु अभेवु सर्वज्ञु सुजानु ॥९॥

.....

एको ओंकार सत्गुरु प्रसाद : प्राण प्यारे साईं मैया की जय

साईं चरित्र चालीसा

दोहा

श्री रघुवर के पद कमल, बार बार सिर नाइ।

वरणउ सतिगुर मिल यश, जो सेवक सुखदाय ॥

श्री सीयराम पद प्रेम, दाता परम उदार ।

जय जय मैगसिचन्द्र प्रभु, रसिक सन्त रिझवार ॥

जय साईं सुखदेवी नन्दन ।

प्रेम निधि रघुवर उर चन्दन ॥

मधुर भक्ति के परम उपासी ।

शील सनेह सिन्धु सुखरासी ॥

श्री रोचल राजकुमार प्यारे ।

श्री आत्माराम आंगन उजियारे ॥

सूफी कुल शिरमोर स्वामी ।

(श्री) अविनाशचन्द्र चरण अनुगामी ॥

मीरपुर सिन्धु को पावन कीनो ।

बाल रूप में दर्शन दीनो ॥

रूप निहार मगनु महतारी ।

नाचत गावत दे दे तारी ॥

बाल खेल रस मोद अपारा ।

तात मात सुख देवन हारा ॥

श्रीखण्डि चन्द नाम सुखधामा ।

परम मधुर सुख सिन्धु ललामा ॥

घास पालने धाय झुलावे ।

हरि हरि नाम मधुर रट लावे ॥

नित्य मध्यान्ह झूलने आवे ।

सुन किलकार नाम सुख पावे ॥

गुर सेवा हित गोबर लावे ।

ठण्ड धाम से नहीं घबरावे ॥

गुर सेवा प्राणनि जे प्यारी ।

ले गुर गोद आशीष उचारी ॥

चिरु जीवो मेरे नन्हें बालक ।

भक्त भूप रसिकनि प्रति पालक ॥

नेही नाम राम अनुरागी ।

सिन्धु देश की किस्मत जागी ॥

कथा कीर्तन मौज मचाकर ।

रस वरसायो रस रत्नाकर ॥

जप साहिब रस सार विचारे ।

बन बन घूमें रस मतवारे ॥

नैननि नेह खुमारी छाई ।

रट रसना नितु सिय रघुराई ॥

सतिगुर प्यास में गेह त्यागा ।

दिव्य लगनि उत्कट वैरागा ॥

अकस्मात कोट कांगड़े आये ।

अविनाश चन्द्र चरण चित लाये ॥

पूरण सत्गुरु दर्शन पावा ।

रोम—रोम रस आनन्द छावा ॥

तन्मय होकर सेवा कीन्ही ।

युगल मन्त्र दीक्षा गुर दीन्ही ॥

रस समाज की झांकी देखी ।

भए विवश परहरी निमेखी ॥

विरह व्यथा नस नस भर गई ।

वहझांकी हृदय धरि लई ॥

रैन दिवस श्री जू नाम पुकारे ।

भोजन नींद की सुरति विसारे ॥

जीह नाम और लोचन नीरा ।

निरखि मगन भए श्रीरघुवीरा ॥

सतिगुर आज्ञा सिर पर धारी ।

आये अपने देश मंझारी ॥

मीरपुर धाम धन्य भयो ऐसे ।

अवध वृन्दावन धन्य हैं जैसे ।

वसे एकांत प्रेम रस छाके ।

जग वहिंवार तनक नहीं ताके ॥

मिलन बोलन का नहिं अवकाशा ।

एक जुगल दर्शन अभिलाषा ॥

अति अनुराग न जानहिं कोई ।

रोम—रोम रस प्रेम समोई ॥

युगल को जीवनु सर्वसु जाना ।

लीला ललित करहिं नितु गाना ॥

आनन्दकन्द अलबेले स्वामी ।

सिय रघुवर पद नित्य नमामी ॥

प्रभु कृपा सत्संग सजाया ।

राम श्याम को लाड़ लड़ाया ॥

भक्त चरित्र गान कर साई ।

प्रेम प्रफुल्लित रहहिं सदाई ॥

पावन शिक्षा सबन को दीनी ।

सबकी मति हरि रस महि भीनी ॥

जहां तहां रस सरित बहाई ।

नाम कथा फूली फुलवाई ॥

सिन्धु देश को पावन करके ।

आये ब्रज हरषि हिंय भरके ॥

वृन्दाविपिन में गेह बनायो ।

सुखनिवास ताको नाम धरायो ॥

सुखनिवास सिय राम का प्यारा ।

तहां युगल का नित्य विहारा ॥

बड़े—बड़े सन्त साईं घरि आये ।

सुखनिवास लखि अति हरिषाये ॥

दोहा :— वृन्दावन नेही निर्मल, श्रीरघुवर प्रेम अखण्ड ।

सन्त चरण पंकज मधुप, स्वामि गरीब श्रीखण्ड ॥

जय जय युगल किशोर की, जय जय मैगसि नाम ।

जय जय जय साईं अमां, जय जय जय सीआराम ॥

जै साईं अमां

.....